|| हिन्दू साम्राज्य दिवस ||

प्रेरक प्रसंग -1

शिवाजी की सहनशीलता

वीर मराठा छत्रपति शिवाजी अपने शत्रुओं को क्षमा दान देने के लिए काफी प्रसिद्ध है । ऐसी ही एक घटना है । एक बार शिवाजी अपने शयनकक्ष में सो रहे थे । रात का समय था । एक चौदह वर्ष का बालक किसी तरह छुपकर उनके शयनकक्ष में जा पहुँचा । वह शिवाजी को मारने आया था । लेकिन शिवाजी के विश्वस्त सेनापति तानाजी ने उसे पहले ही देख लिया था । लेकिन फिर भी उन्होंने उसे जाने दिया । वह जानना चाहते थे कि आखिर यह लड़का क्या करने आया है !उस लड़के ने तलवार निकाली और शिवाजी पर चलाने ही वाला था कि पीछे से तानाजी ने उसका हाथ पकड़ लिया । इतने में शिवाजी की भी नींद टूट गई ।उन्होंने उस बालक से पूछा कि तुम कौन हो और यहाँ क्यों आये हो ? उस बालक ने निडरता पूर्वक बताया कि उसका नाम मालोजी है और वह शिवाजी की हत्या करने आया था ।जब शिवाजी ने उससे कारण पूछा तो उसने बताया कि “मैं एक गरीब घर से हूँ तथा मेरी माँ कई दिनों से भूखी है । इसलिए अगर मैं आपकी हत्या कर दूँ तो आपका शत्रु सुभाग राय मुझे बहुत सारा धन देगा ।यह सुनकर तानाजी गुस्से में बोले – “ मुर्ख बालक ! धन से लोभ से तू छत्रपति शिवाजी का वध करने आया है ! अब मरने के लिए तैयार हो जा ?”इतने में मालोजी शिवाजी से बोला – “ महाराज ! मैंने आपका वध करने की कोशिश की अत: निसंदेह मैं दण्ड के योग्य हूँ, लेकिन कृपा करके मुझे अभी के लिए जाने दीजिये । मेरी माँ भूखी है वह जल्द ही मर जाएगी । माँ का आशीर्वाद लेकर मैं सुबह आपके सामने उपस्थित हो जाऊंगा ।”बालक की बातें सुनकर तानाजी बोले – “ हम तेरी बातो के धोखे में आने वाले नहीं है, दुष्ट बालक !”बालक मालोजी बोला – “ मैं एक मराठा हूँ सेनापति महोदय ! और आप बखूबी जानते हो कि मराठा कभी झूठ नहीं बोलते ।” इतना सुनकर शिवाजी ने उस बालक को जाने दिया ।दुसरे दिन सुबह जब राजदरबार में छत्रपति शिवाजी महाराज सिंहासन पर बैठे थे । तभी द्वारपाल एक सन्देश लेकर आया कि एक बालक महाराज से मिलना चाहता है । जब उसे अन्दर बुलाया गया तो यह वही बालक था जिसे कल रात शिवाजी ने माँ का आशीर्वाद लेने जाने दिया था ।महाराज के सामने आकर बालक बोला – “ मैं आपका अपराधी महाराज ! आपकी उदारता के लिए आपका आभार व्यक्त करता हूँ । आप जो चाहे दण्ड दे सकते है ।”शिवाजी ने सिंहासन से उठकर उस बालक को गले लगाते हुए कहा – “ तुम जैसे सच्चे मराठाओं को अगर मृत्यु दण्ड दे देंगे तो फिर जिन्दा किसे रखेंगे ? आजसे तुम हमारी सेना के सैनिक हो ।”छत्रपति ने उसे बहुत सारा धन दिया तथा उसकी माँ की चिकित्सा के लिए राज वैद्य को भेजा गया ।

|| हिन्दू साम्राज्य दिवस ||

प्रेरक प्रसंग -2

शिवाजी का महान चरित्र

छत्रपति शिवाजी महाराज सिर्फ महान योद्धा ही नहीं वरन एक चरित्रवान इंसान भी थे | उनकी वीरता की कई कहानिया आपसे सुनी होगी किन्तु आज हम आपको उनके ऊंचे चरित्र की दास्तान सुना रहें है | एक बार शिवाजी के वीर सेनापति ने कल्याण का किला जीता| हथियारों के जखीरे के साथ उनके हाथ अकूत संपत्ति भी लगी| एक सैनिक ने मुगल किलेदार की बहू को, जो दिखने में काफी सुंदर थी, उसके सामने पेश किया| वह सेनापति उस नवयौवना के सौंदर्य पर मुग्ध हो गया|

सेनापति ने शिवाजी महाराज को बतौर नजराना उस महिला को भेंट करने की ठानी|वह नवयौवना को एक पालकी में बिठाकर शिवाजी महाराज के दरबार में पहुंचा| शिवाजी उस समय अपने सेनापतियों ते साथ शासन-व्यवस्था के संबंध में विचार-विमर्श कर रहे थे| युद्ध में जीतकर आए सेनापति ने शिवाजी को प्रणाम किया और कहा कि महाराज वह कल्याण से जीतकर लाई गई एक चीज को आपको भेंट करना चाहता है| यह कहकर उसने एक पालकी की ओर इंगित किया| शिवाजी ने ज्यों ही पालकी का पर्दा उठाया तो देखा की उसमें एक सुंदर मुगल नवयौवना बैठी हुई है|

शिवाजी महाराज का शीश लज्जा से झुक गया और वह बोले, 'काश! हमारी माता भी इतनी खूबसूरत होती तो मैं भी खूबसूरत होता|' इसके बाद अपने सेनापति को डांटते हुए उन्होंने कहा कि 'तुम मेरे साथ रहते हुए भी मेरे स्वभाव के समझ नहीं सके| शिवाजी दूसरे की माता-बेटियों को अपनी मां के समान मानता है| अभी इनको ससम्मान इनकी माता के पास छोड़कर आओ|'सेनापति शिवाजी के व्यवहार से काफी अचंभित हुआ| कहां तो वह अपने आपको इनाम का हकदार समझ रहा था और नसीब हुई तो सिर्फ फटकार| लेकिन मुगल सूबेदार की बहू को उसके घर पहुंचाने के उसके पास कोई चारा नहीं था| मन ही मन उसने शिवाजी महाराज के चरीत्र को पहचाना और मुगल खेमे की महिला को उसके खेमे तक पहुंचा दिया| ऐसे थे महान छत्रपति शिवाजी महाराज और उनका चरित्र |

|| हिन्दू साम्राज्य दिवस ||

प्रेरक प्रसंग -3

शिवाजी का सन्यास

छत्रपति शिवाजी अक्सर अपने गुरु समर्थ गुरु रामदास से मिलने जाया करते थे । समर्थ गुरु की मस्ती और आनंद को देखकर शिवाजी का मन भी कभी – कभी इस परेशानियों से भरे राजकाज से छुटकारा पाने को करता था । दिन दुगुनी रात चौगुनी समस्याओं से लड़ते – लड़ते शिवाजी बुरी तरह से परेशान हो चुके थे । अब तो वह भी किसी तरह सन्यास लेकर राजकाज के झंझट से बचना चाहते थे । एक दिन ऐसा ही विचार लेकर शिवाजी समर्थ गुरु के पास गये और बोले – " गुरुदेव ! राजकाज की जिम्मेदारियों से बहुत परेशान हो चूका हूँ, सोच रहा हूँ सन्यास ले लूँ ?"समर्थ गुरु बड़े ही सहजभाव से बोले – " अवश्य सन्यास ले लो । यह सबसे उत्तम राह है, सुखशांति पूर्वक जीवन व्यतीत करने की ।"शिवाजी सोच रहे थे कि गुरुजी आसानी से अनुमति नहीं देंगे किन्तु समर्थ गुरु तो झट से मान गये । यह देख शिवाजी खुश हो गये ।शिवाजी बोले – " तो गुरुदेव आपकी दृष्टि में ऐसा कोई व्यक्ति है, जो राजकाज संभाल सके । कोई ऐसा जो कर्तव्य पूर्वक सम्पूर्ण राज्य का पालन – पोषण कर सके ।"समर्थ गुरु बोले – " मुझे दे दे और निश्चिन्त होकर सन्यासी बन । मैं किसी योग्य व्यक्ति को नियुक्त करके सारा राजकाज संभाल लूँगा ।"हाथों में जल लेकर शिवाजी ने अपना सम्पूर्ण राज्य समर्थ गुरु रामदास को दान कर दिया । इसके बाद शिवाजी महल में गये और कुछ मुद्राएँ भावी खर्चें के लिए लेकर जाने लगे । शिवाजी जा ही रहे थे कि समर्थ गुरु बोले – " अरे शिवा रुक ! राज दान कर दिया तो राज के धन पर तेरा कोई अधिकार नहीं । अत: राज्य की मुद्राएँ तू अपने साथ नहीं ले जा सकता " गुरुदेव की तर्कपूर्ण बात सुनकर शिवाजी ने मुद्राएँ वही रख दी और चल दिए ।शिवाजी थोड़ी ही दूर गये थे कि समर्थ गुरु बोले – " अरे शिवा ! अब तो तू सन्यासी हो गया है ।

|| हिन्दू साम्राज्य दिवस ||

प्रेरक प्रसंग -3

शिवाजी का सन्यास...

अत: राजसी वस्त्रों में जाना सन्यास के अनुकूल नहीं ।"

इतना कहकर समर्थ गुरु ने शिवाजी के लिए भगवे वस्त्रों की व्यवस्था करवा दी । भगवे वस्त्र पहनकर शिवाजी चल दिए कि पीछे से समर्थ गुरु बोले – " ध्यान रहे ! तुम इस राज्य की सीमा में भी नहीं रह सकते ।"शिवाजी बोले – " हाँ ठीक है गुरुदेव !"शिवाजी थोड़ी दूर गये थे कि फिर समर्थ गुरु बोले – " भई ! तुम जा तो रहे हो, लेकिन भविष्य के बारे में भी कुछ सोचा है या नहीं ?"शिवाजी बोले – " भगवान भरोसे है ! गुरुदेव !"गुरुदेव बोले – " अरे फिर भी कुछ तो सोचा ही होगा, बिना परिश्रम के पारितोषिक तो नहीं मिलता ।"शिवाजी बोले – " मेहनत – मजदूरी और नौकरी करके अपना गुजारा चला लूँगा गुरुदेव !"समर्थ गुरु बोले – " अच्छा ! तो यहाँ आ, मेरे पास है तेरे लिए सबसे बढ़िया नौकरी !"शिवाजी बोले – " जी गुरुदेव ! बताइए आपकी बड़ी कृपा होगी ?"समर्थ गुरु बोले – " देख ! तूने यह राज्य मुझे दे दिया है । अब मैं जिसे चाहू, इसकी देखभाल के लिए रख सकता हूँ । इसलिए मुझे किसी योग्य व्यक्ति की खोज करनी पड़ेगी । अत: मैं सोचता हूँ कि तुम इसके लिए सबसे अधिक योग्य व्यक्ति हो । आजसे तू मेरा राज्य संभालना ! इस भाव से नहीं कि तू इसका स्वामी है, बल्कि इस भाव से कि तू इसका सेवक मात्र है । तेरे पास मेरी यह अमानत है ।"इस तरह सेवाभाव से राज्य सञ्चालन करने में शिवाजी को फिर कभी कोई झंझट मालूम नहीं हुआ ।शिक्षा – असल में समस्या मालिक बनने में होती है, सेवक बनने में नहीं । अगर हम भी अपने कर्तव्यों का निर्वाह सेवक की तरह करे तो कोई कारण नहीं कि हमें परेशान होना पड़े । अत: आज ही इस कहानी से शिक्षा लेकर स्वयं को एक सेवक की तरह गढ़िये ।

|| हिन्दू साम्राज्य दिवस ||

प्रेरक प्रसंग -4

शिवाजी की गुरुभक्ति

समर्थ गुरु रामदास का शिवाजी के प्रति अधिक स्नेह देख उनके अन्य शिष्य सोचते थे कि शिवाजी के राजा होने से गुरु रामदास का उनके प्रति अधिक स्नेह है ।

आखिर एक दिन समर्थ गुरु ने अपने शिष्यों की इस गलत फहमी को दूर करने का निश्चय किया ।

एक दिन समर्थ गुरु रामदास अपने शिष्यों के साथ जंगल के रास्ते गुजर रहे थे । तभी अचानक उनके पेट में दर्द शुरु हो गया । सभी शिष्य गुरुदेव के दर्द को लेकर बहुत परेशान थे । तब शिवाजी ने पूछा – " इसका कोई इलाज नहीं है क्या गुरुदेव ?"समर्थ गुरु बोले – " शिवा ! इलाज तो है लेकिन वो तुम्हारे में से किसी के बस का नहीं है ।" यह सुनकर सभी शिष्य एक स्वर में बोले – " गुरुदेव ! आप बताइए, हम आपका इलाज जरुर करेंगे ।"तब समर्थ गुरु बोले – " अगर शेरनी के दूध की व्यवस्था हो सके तो मेरा दर्द दूर हो सकता है ।"यह सुनते ही सभी शिष्य पीछे हट गये । लेकिन शिवाजी ने साहस से आगे बढ़कर अपने गुरु का पात्र लेकर जंगल की ओर निकल गये । बहुत देर तक जंगल में भटकने के बाद शिवाजी ने देखा कि एक गुफा में गुर्राने की आवाज़े आ रही है । जब शिवाजी ने अन्दर जाकर देखा तो पाया कि एक शेरनी अपने बच्चों को दूध पिला रही है ।शिवाजी शेरनी से प्रार्थना करने लगे कि – " हे माँ ! मैं यहाँ तुम्हे या तुम्हारे बच्चों को नुकसान पहुँचाने नहीं आया बल्कि अपने गुरुदेव के पेट दर्द को दूर करने के लिए मुझे तुम्हारे थोड़े से दूध की आवश्यकता है । इसलिए कृपा करके मुझे दूध लेने दे ।"इतना सुनकर शेरनी शिवाजी के पास आकर उनका पैर चाटने लगी । शिवाजी ने दूध निकाल लिया और शेरनी को प्रणाम करके चल दिए ।जब शिवाजी समर्थ गुरु के पास पहुंचे तो गुरुदेव बोले – " देखा ! मुझे पता था । शिवा दूध लेकर जरुर आएगा ।

मेरा कोई पेट दर्द नहीं हो रहा है, ये सब तो तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए एक नाटक किया मैंने ।

अब समझे मुझे शिवा से अधिक स्नेह क्यों है !"सभी शिष्यों ने अपने सिर झुका लिए ।

|| हिन्दू साम्राज्य दिवस ||

प्रेरक प्रसंग -5

शिवाजी को बुढ़िया की सीख

एक बार शिवाजी युद्ध के दौरान बुरी तरह से थक गये । आस – पास कुछ न देख वह एक वनवासी बुढ़िया के घर में जा घुसे । बहुत भूख लगी थी अत: उन्होंने कुछ खाने के लिए माँगा । सैनिक समझकर बुढ़िया ने उनके लिए प्रेम पूर्वक भात पकाकर एक पत्तल पर परोस दिया ।शिवाजी को भूख जोर से लगी थी अत: उन्होंने जल्दबाजी में भात के बीच में हाथ दे मारा और अपनी अंगुलियाँ जला बैठे ।

यह देखकर बुढ़िया बोली – " सैनिक ! दिखने में तो तू समझदार दिखाई देता है फिर भी मुर्ख शिवाजी की तरह गलती कर रहा है !"यह सुनकर शिवाजी के कान खड़े हो गये ।

वह बोले – " माई ! शिवाजी ने ऐसी क्या गलती की जो आप उनको मुर्ख बोल रहे हो और मेरी गलती बताने की भी कृपा करें ।"

बुढ़िया बोली – " सैनिक ! जिस तरह तू किनारे की ठंडी भात खाने के बजाय बीच में अपना हाथ डालकर अपनी अंगुलियाँ जला रहा है उसी तरह शिवाजी भी पहले छोटे – छोटे किलों को जीतकर अपनी शक्ति बढ़ाने के बजाय बड़े किलो पर धावा बोलकर मुंह की खाता है ।

इसीलिए मैंने तुझे शिवाजी की तरह मुर्ख कहा ।"अब शिवाजी को अपनी हार का कारण समझ आ चूका था । उन्होंने पहले छोटे – छोटे किलो को जीतकर अपनी शक्ति बढ़ाना शुरू कर दिया और बड़े – बड़े किले भी फतह कर लिए । शिवाजी को बुढ़िया की सीख काम आई ।

|| हिन्दू साम्राज्य दिवस ||

प्रेरक प्रसंग -6

बाल शिवाजी का स्वाभिमान

शिवाजी महाराज के पिता का नाम शाह जी और माता का नाम जीजाबाई था. पिता शाहजी बीजापुर दरबार के कृपापात्र दरबारी थे .शाहजी चाहते थे कि उनका पुत्र बीजापुर दरबार का सेवक बने .जब शिवाजी आठ वर्ष के थे उनके पिता उन्हें दरबार दिखाने ले गए .उन्होंने सोचा शिवा दरबार की शान शौकत से प्रभावित हो जायेगा पर बालक शिवा पर माता जीजाबाई दुवारा बचपन से रामायण ,महाभारत ,और पुराणों की सुनाई गई वीर गाथाओं का प्रभाव था .बालक शिवा बिना किसी से प्रभावित हुए पिता के साथ ऐसे चलते गए जैसे साधारण मार्ग पर जा रहे हो .

नवाब के सामने पहुचकर पिता ने नवाब का झुककर अभिवादन किया और शिवा को कहाँ – ' बेटा ! बादशाह को सलाम करो .'बालक ने पिता की और देखा और खा बोला – ' बादशाह मेरे राजा नहीं हैं . मैं इनके सामने सिर नहीं झुका सकता .'दरबार में सनसनी फ़ैल गई . नवाब बालक की ओर घूरकर देखने लगा ; किन्तु शिवा ने सिर नहीं झुकाया

.शाहजी ने नवाब से प्रार्थना की – ' शाहंशाह ! क्षमा करें'.यह अभी नादान हैं और बालक को लेकर घर आ गए .घर आने पर शाहजी ने शिवा को डाटा , तब शिवा ने उत्तर दिया-' मेरा मस्तक केवल तुलजा भवानी और आपको छोड़कर किसी की सामने नहीं झुक सकता '.

|| हिन्दू साम्राज्य दिवस ||

प्रेरक प्रसंग -7

शिवाजी के निर्भयता

एक प्रसिद्ध किस्सा है, शिवाजी महाराज के साहस का। यह उस समय की बात है, जब पुणे के करीब नचनी गांव में एक भयानक चीते का आतंक छाया हुआ था। वह चीता अचानक ही कहीं से हमला करता था और जंगल में ओझल हो जाता।

सभी डरे हुए गांव वाले अपनी समस्या लेकर शिवाजी के पास पहुंचे और विनती करते हुए कहा- हमें उस भयानक चीते से बचाइए, महाराज। वह अबतक ना जाने कितने बच्चों को मार चुका है।

ज्यादातर वह चीता तब हमला करता है, जब हम सब सो रहे होते हैं।

महाराज शिवाजी ने धैर्यपूर्वक ग्रामीणों की समस्या सुनी और उन्हें ढाढ़स बंधाते हुए कहा- आप लोग निश्चिंत रहे, किसी बात की चिंता मत करिए, मैं यहां आपकी मदद करने के लिए ही हूं।

फिर शिवाजी अपने सिपाहियों यसजी और कुछ सैनिकों के साथ जंगल में चीते को मारने के लिए निकल पड़े। बहुत ढूंढ़ने के बाद जैसे ही चीता सामने आया, सैनिक डर के मारे पीछे हट गए पर शिवाजी और यसजी बिना डरे ही चीते पर टूट पड़े और पलक झपकते ही उस मार गिराया।

|| हिन्दू साम्राज्य दिवस ||

प्रेरक प्रसंग -8

अफजल खां और शिवाजी

1 नवम्बर 1656 को बीजापुर के सुल्तान आदिलशाह की मृत्यु हो गई. इससे बीजापुर में अराजकता का माहौल पैदा हो गया. इस स्थिति का लाभ उठाकर औरंगज़ेब ने बीजापुर पर आक्रमण कर दिया और शिवाजी ने औरंगजेब का साथ देने की बजाय उस पर धावा बोल दिया. फलस्वरूप औरंगजेब शिवाजी से खफ़ा हो गये. और शाहजहाँ के आदेश पर औरंगजेब ने बीजापुर के साथ संधि कर ली. इस दौरान शाहजहाँ बीमार पड़ गये. इसलिये औरंगज़ेब वापस उत्तर भारत चले गये.औरंगजेब के आगरा लौटने के बाद बीजापुर के सुल्तान आदिलशाह द्वितीय ने भी राहत की सांस ली.

अब शिवाजी ही बीजापुर के सबसे प्रबल शत्रु रह गये थे. सुल्तान ने शाहजी को अपने पुत्र को नियंत्रण में रखने को कहा था. पर शाहजी ने इसमें अपनी असमर्थता जाहिर कर दी थी. शिवाजी को समाप्त के लिए बीजापुर के सुल्तान आदिलशाह की विधवा बेगम ने अफ़ज़ल खाँ (अब्दुल्लाह भटारी) को शिवाजी के विरुद्ध भेजा.

अफ़जल खाँ ने बारूद असले व घुड़सवारों से सुसजित विशाल सेना के साथ 1659 में कूच किया. अफ़जल रास्ते में लूटपाट करता हुआ प्रतापगढ़ पहुंचे. शिवा जी का खून खौल उठा पर वो जानते थे कि, उनकी सैन्य क्षमता सीमित है. अत: उन्होंने कूटनीति का परिचय दिया और मौन साधे रखा. अफ़जल खाँ ही उनके पिता को बंदी बनाने तथा भाई संभाजी की मौत का सूत्रधार था. अफ़जल खाँ ने शिवाजी के पास सन्धि-वार्ता के लिए अपने दूत कृष्णजी भास्कर के साथ मैत्री का सन्देश भेजा. उसने उसके मार्फत ये संदेश भिजवाया कि, अगर शिवाजी बीजापुर की अधीनता स्वीकार कर ले, तो सुल्तान उसे उन सभी क्षेत्रों का अधिकार दे देंगे जो शिवाजी के नियंत्रण में थे. साथ ही शिवाजी को बीजापुर के दरबार में एक सम्मानित पद प्राप्त होगा.शिवाजी के मंत्री व सलाहकार इस संधि के पक्ष में थे. पर शिवाजी को ये बात रास नहीं आ रही थी.

|| हिन्दू साम्राज्य दिवस ||

प्रेरक प्रसंग -8

अफजल खां और शिवाजी..

उन्होंने कृष्णजी भास्कर को उचित सम्मान देकर अपने दरबार में रख लिया और अपने दूत गोपीनाथ को वस्तुस्थिति का जायजा लेने अफजल खाँ के पास भेजा. गोपीनाथ और कृष्णजी भास्कर से शिवाजी को लगा कि सन्धि का षडयंत्र रचकर अफजल खाँ शिवाजी को बन्दी बनाना चाहता है.
शिवाजी ने भी कूटनीति का उत्तर कूटनीति से देते हुए अफजल खाँ को एक बहुमूल्य उपहार भेजे. और इस तरह अफजल खाँ से सन्धि वार्ता के लिए तैयार हो गये.10 नवमबर 1659 को अफ़जल खाँ अपनी सेना के साथ वार्ता स्थल पर पहुँच गये. शिवाजी से प्रेम करने वाले उनके देशभक्त साथी अन्य सेनापति आदि शिवाजी की सुरक्षा को लेकर बहुत चिंतित थे. परन्तु शिवाजी के हृदय में तो स्वराज्य को सुदृढ़ करने का निश्चय था. शिवाजी ने अपना जिरह बख्तर, कुर्त्ता और अंगरखा धारण किये. तथा सर पर बख्तर धारण कर टोपी पहनी, अपने एक हाथ में बघनखा धारण किया और अफ़जल खाँ से मिलने चल दिये.धूर्त अफ़जल खाँ ने शिवाजी को गले मिलने का न्यौता दिया. लम्बे भीमकाय शारीर वाले अफ़जल खाँ ने कंधे तक पहुँचने वाले शिवाजी की गर्दन अपनी बगल में दबाकर पेट में कटार मारने वाला ही थे कि, पलभर में शिवाजी ने बांये हाथ में छुपाए बाघनख से खान का पेट फाड़ दिया और मार दिया.
अफजल खाँ की मौत का इशारा मिलते ही तैयार खड़ी मावली सेना ने मोरोपन्त पिंगले और नेताजी पालकर के नेतृत्व में खान की फौज पर आक्रमण कर दिया. और बौखलायी हुई सेना को खुले युद्ध में परास्त किया. और जो सामान अफ़जल खाँ ने प्रतापगढ़ आते हुए लूटा था, वो अपने क जे में कर लिया.शिवाजी महाराज ने अदम्य साहस, अचूक योजना, अनूठी सूझ-बूझ से एक कपटी सरदार और उसकी फ़ौज का अंत कर दिया.